A poetic inquisition

# जवाब देना होगा

Answer to be sought in 21st century from self, society, soul and Sarkars to sustain true democracy and scientific temper in developing countries

Volume-I "Questions of Postmodern World"
- House of Nomadic dreamchanters

कुछ दबें हुए जज्बात, छुपाये बैठा हूं, खोये हुए कुछ अल्फ़ाज़, सजाये बैठा हूं।
बेशक भड़क जाओगे, सुनकर तुम, लेकिन ज़वाब दोगे, ये आस लगाए बैठा हूं।।

Shashank Singh &
Dheeraj Kumar

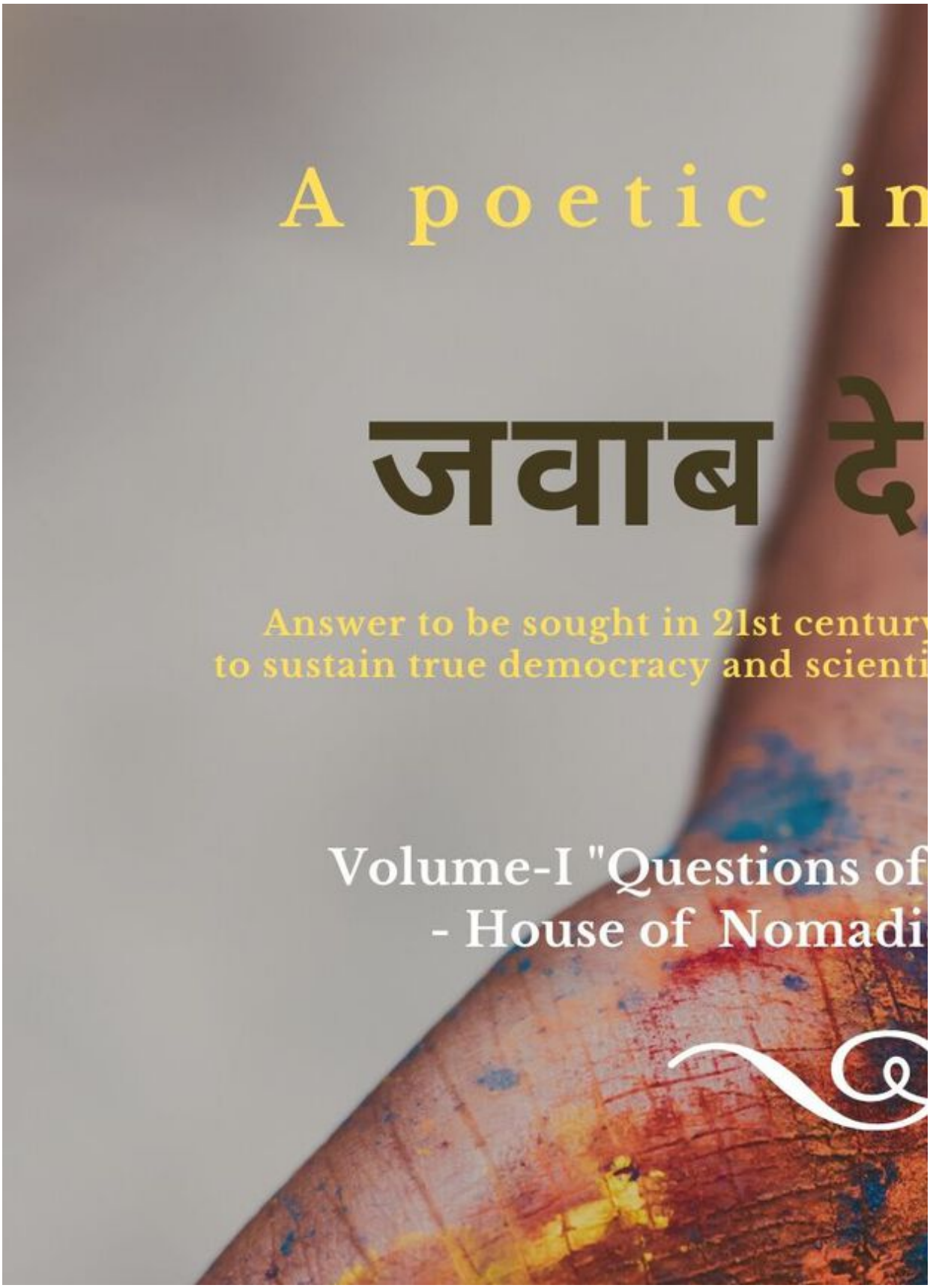
A poetic in
जवाब दे
Answer to be sought in 21st centur
to sustain true democracy and scienti
Volume-I "Questions of
- House of Nomadi

# हैप्पी फ़ादर्स डे

सर्वतीर्थमयी माता सर्वदेवमयः पिता।
मातरं पितरं तस्मात् सर्वयत्नेन पूजयेत्।।

# आभेस्वीकृति

**'जवाब देना होगा'** कि इस संस्करण में, मैं उन तमाम लोगों का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ, जिन्होंने मुझे लिखने के लिए प्रेरित किया।

सर्वप्रथम मैं अपने पूजनीय पिता जी श्री अजय प्रताप सिंह, माता जी श्रीमती आशा सिंह और नाना श्री राम जी सिंह का आभार व्यक्त करना चाहता हूं, जिन्होंने बचपन से ही चीजों को समझने की और उनके विश्लेषण, उचित सामाजिक और तार्किक मूल्यों के आधार पर करने की शक्ति प्रदान की। मैं आज काफी गौरवान्वित महसूस करता हूं कि ऐसे अभिभावकों के संरक्षण में मैंने अपना बचपन बिताया।

मैं आभार व्यक्त करना चाहता हूं विकास रंजन सर का भी जिन्होंने हर विपरीत परिस्थितियों में मार्गदर्शन किया और दुनिया को समझने का एक बेहतरीन अंदाज मेरे मस्तिष्क में विकसित किया।

मैं धन्यवाद कहना चाहता हूं, आनंद कुमार चौबे जी का जिन्होंने यह किताब लिखने के लिए प्रेरित ही नहीं किया अपितु संपादक की भूमिका भी बखूबी निभाई है।

मैं धन्यवाद व्यक्त करना चाहता हूं अपने समस्त परिवार गणों – श्रीमती सुशीला सिंह, विनय सिंह, विकास सिंह, विवेक सिंह, अजीत सिंह, शिवाली सिंह, शिवांगी सिंह, शिवानी सिंह, सौम्या सिंह, सरल सिंह, मोहित सिंह, चित्रांगदा सिंह, अद्विका सिंह और राजा पाल का समस्त सुख दुख में साथ खड़े रहने के लिए।

मैं अपनी मानसिक वैचारिक और बौद्धिक उपज के जन्मदाता, समस्त मित्रगण- चंद्रकांत बागोरिया, सिद्धार्थ कृष्ण त्रिपाठी, राकेश जयसवाल, सुमित कुमार अग्रवाल, हिमांशु शाही, एकांश प्रताप सिंह, विवेक मणि त्रिपाठी, दीपक पाण्डेय, मुकेश त्रिपाठी, प्रियव्रत त्रिवेदी, कुशाग्र सिंह, उज्जवल, विनोद सिंह, कृष्ण प्रताप सिंह, आशीष वर्मा, सौरभ कुमार, नीरज केसरवानी ,श्रेयस सिंह ,अनंत विजय, शुभम सिंह का तहे दिल से आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। अपने मित्रगणो के सानिध्य में रहकर और बातें करके जीवन में बहुत कुछ सीखने का मौका मिला।

मैं स्वयं से जुड़े सभी लोगों का आभार व्यक्त करना चाहता हूं जिन्होंने कभी न कभी मेरे मस्तिष्क में अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

अंत में मैं, ईश्वर का, अपने देश, अपनी सेना और समस्त जनमानस का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जिनकी प्रेरणा से ही आज मैं यह संस्करण लिखने में कामयाब हो पाया हूँ।

**शशांक सिंह**

सर्वप्रथम मैं अपने पूजनीय पिताजी श्री जसवंत सिंह और माताजी श्रीमती शीला देवी का आभार व्यक्त करना चाहता हूं, जिनकी छत्रछाया में मैंने अपने जीवन को अनुग्रहित किया, पिताजी की मानसिक स्थिति खराब होने के बाद उत्पन्न हुए मुश्किल हालातो में मेरी माताजी ने जिस धैर्य और परिश्रम का परिचय देते हुए परिस्थितियों के विपरीत सदैव हमारे लिए सबसे अच्छा करने का प्रयास किया, उसका मै सदैव ऋणी रहूंगा। मुझे शिक्षित करने का पूरा श्रेय मेरी माता जी के अथक प्रयासों को ही जाता है। किताबे पढ़ने और कविता लिखने की रुचि का सारा श्रेय मैं पिताजी को देना चाहता हूं। श्रीमद्भागवत गीता का संपूर्ण ज्ञान सार, उनके वाचन में सुनना मेरे लिए मेरे जीवन के सबसे आनंदित पलो में हमेशा रहेगा। जितने भी उपन्यास मैंने पढ़े है, वो सब मुझ से पहले पिताजी पढ़ते है, उनके विश्लेषण के बाद ही उस पुस्तक को मै पढ़ता हूं। मैं आज काफी गर्व महसूस करता हूं ऐसे अभिभावकों के संरक्षण में मैंने अपना बचपन बिताया।

मैं आभार व्यक्त करना चाहता हूं मेरे मातृकुल सूर्या परिवार का जिनमें नानी श्रीमती वीरवती, श्री विजय सूर्या, श्रीमती चमेली सूर्या, श्री रामचरण सूर्या, श्रीमती कांता सूर्या, श्री सुरेन्द्र सूर्या, श्रीमती उषा सूर्या, श्री कमल सूर्या, मीना सूर्या  तथा सूर्या परिवार के सभी लोगो को जिन्होंने हर विपरीत परिस्थितियों में हमारा मार्गदर्शन किया।

मैं धन्यवाद कहना चाहता हूं शशांक सिंह जी का जिन्होंने ना केवल यह किताब लिखने के लिए प्रेरित किया बल्कि अपने साथ इस किताब को लिखने का अवसर भी दिया और संपादक की भूमिका निभाई।

मैं धन्यवाद व्यक्त करना चाहता हूं अपने समस्त परिवार गणों- श्री हरिसिंह, श्रीमती शांति, श्री देवेन्द्र, श्री राजीव गौतम, श्रीमती रेनू गौतम, श्री अर्पण सिंह, श्रीमती निशा रानी, श्री धीरसैन जोशी, श्रीमती कांता जोशी, श्री अमीचंद, श्रीमती योगिता, श्री अनिल, श्रीमती कमलेश, श्री अनीता ,श्री मुकेश, आशीष, मयंक, सिद्धांत, मोहित और स्नेहा का और समस्त सुख दुख में साथ खड़े रहने के लिए शुक्रिया अदा करता हूं।

मैं अपनी मानसिक वैचारिक और बौद्धिक उपज के जन्मदाता समस्त मित्रगण हिमांशु जोहरी, मनोज कुमार, शिवम् गोयल, रवि कुमार, शैंकी चंद्रा, सौरुभ कटारिया, शशांक शर्मा, मनीषा ग्रोवर, स्वेता,  विधि सिन्हा, श्वेता का तहे दिल से आभार व्यक्त करना चाहता हूं। अपने मित्रगणो के सानिध्य में रहकर और बातें करके जीवन में बहुत कुछ सीखने का मौका मिला। मै आभार व्यक्त करता हूं उन सभी लोगो का जो कहीं ना कहीं मेरे जीवन से जुड़े रहे है तथा जिन्होंने कहीं ना कहीं मेरे जीवन में अपनी छाप छोड़ी है।

अंत में मै सभी को धन्यवाद करता करना चाहता हूँ, जिनके आशीर्वाद और प्यार की वजह से मै यह संस्करण लिखने में गर्व का अनुभव कर रहा हूं।

**धीरज कुमार**

और अंत में हम यही प्राथना करते हैं कि:

सर्वे भवन्तु सुखिनः,सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्।।

# प्रस्तावना

**भारतीय संविधान अनुच्छेद 51A (ज): भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे।**

***दबें हुए जज्बात, छुपाये बैठा हूं,***
*खोये हुए अल्फ़ाज़, सजाये बैठा हूं।*
***बेशक भड़क जाओगे, सुनकर तुम,***
*कुछ ऐसा, कयास लगाये बैठा हूं।*
*फिर भी दोगे, हमेशा साथ मेरा*
*आज भी, ये आस लगाए बैठा हूं।।*

प्रस्तुति सौजन्य से: **House of Nomadic Dreamchanters**

**'जवाब देना होगा'** **Volume-I "Questions of Postmodern World"**

**हम इंसान हैं और यही प्रविति हमें जानवरों से अलग करती हैं क्योंकि हम सवाल पूछ सकते हैं, हम जवाब मांग सकते हैं और जवाबों में भी सवाल ढूंढ़ सकने का प्रयास कर सकते हैं।**

**हम भारत के नागरिक हैं और यह सिर्फ हमारा मौलिक अधिकार ही नहीं** अपितु **मौलिक कर्तव्य भी है कि हम सवाल पूछकर, जवाब मांगकर अपनी विचारधारा को वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और समाज सुधार की दिशा में प्रेरित करें। एक लोकतान्त्रिक गणतंत्र के संप्रभु नागरिक होने के नाते, इस संप्रभुता को बनाए रखने के लिए सवाल पूछना, जवाब मांगना और जवाबों में फिर से सवाल खड़ा करना अत्यंत आवश्यक है। इस कठिन समय में जब कोरोना वायरस नामक महामारी चारों तरफ फैली** हुई है, हमें मानवता के सबसे बहुमूल्य उपहार, जो कि सवालों को पूछना और जवाबों को मांगना है, को भूलना नहीं चाहिए। क्यूँकि **विपत्ति काल में समाज में निहित शक्तियां हमेशा से ही केन्द्रीयकरण की ओर उन्मुक्त होती आयी हैं।**

**आजकल ना कोई सवाल पूछना चाहता है, ना कोई जवाब देना चाहता है। सब गूंगे बन बैठे हैं, सब बहरे बन बैठे हैं, सब अंधे बन बैठे हैं और सवालों को**

बौना बता कर उनका मजाक उड़ाया जाता है, सवाल पूछने वालों को अंगूठा दिखाया जाता है।

हमें सवाल सिर्फ सरकार से नहीं बल्कि समाज से भी पूछने होते हैं, सवाल हमें खुद से भी पूछने होते हैं, सवाल हमें परिस्थियों से भी पूछने होते है, अपने खुदा से भी पूछने होते है और सिर्फ कुछ सवाल पूछने से ही हमारा कर्तव्य पूरा नहीं होता है। हमें जवाब भी मांगने होते है और खुद भी जवाब देने होते हैं। खुद यह जो जवाब हमें देने हैं कभी हमें खुद को देने हैं, कभी अपने पर्यावरण की तरफ अपनी निर्ममता को लेकर देने हैं, कभी महिलाओं पर हुए अत्याचार को लेकर देने हैं , कभी मजदूरों को देने हैं, और कहीं हमें हमारी कठिन निर्बल परिस्थितियों पर देने होते हैं। चूँकि आजकल सवालों के जवाब में सिर्फ सवाल ही पैदा हो रहे हैं इसलिए आज हम कह रहे हैं कि जवाब देना होगा, हां जवाब देना होगा।

इस संकलन 'जवाब देना होगा' के प्रथम संस्करण में हमने अपनी कविताओं के माध्यम से काफी सारे सवाल पूछे हैं और सिर्फ सवाल पूछ के हम रुके नहीं हैं हमने यह भी समझाया है कि हां जवाब देना होगा, और क्यूँ जवाब देना होगा। 21वीं सदी के इस काल में शायद कुछ बड़े चुनिंदा पेंचिदा सवाल जो मानवता हाँथ फैला कर पूछ रही है उनमें से कुछ सवालों के जवाब यहां हमने मांगने की विनम्र कोशिश की है।

पहली कविता 'जवाब देना होगा' में यह जवाब एक स्त्री के माध्यम से माँगा गया है, जिसने अपनी जिंदगी में कई तरीके के जुल्म देखे हैं। जिसने भ्रूण हत्या, बाल विवाह और दफ्तरों में अपमान जैसे कई अत्याचार महिलाओं पर होते देखे है। जिसे पितृसत्ता की व्यवस्था ने सिर्फ लड़के पैदा करने के लिए मजबूर कर दिया है और उसकी खूबसूरती पर लांछन लगाकर कई बार तेजाब फेंकने की धमकी देकर डराया भी गया है। वह इन सवालों के जवाब चीख़ कर, चिल्ला कर मांग रही है और यह चेतावनी भी दे रही है कि अगर जवाब नहीं दिया गया तो आने वाली नस्लें और समय, तुम सब को माफ नहीं करेगा। अगर जवाब नहीं दे पाओगे तो चाहे तुम पुरुष हो, चाहे महिलाएं, चाहे सरकार हो या चाहे सलाहकार हो सब गुनहगार बनोगे।

अगली कविता 'सवाल एक पत्रकार की कलम से' में यह जवाब पत्रकारों की कलम से मांगा जा रहा है कि उसने क्यों सवाल पूछने बंद कर दिए हैं? फिर जवाब कैसे मिलेंगे? पत्रकार की कलम आज बड़ी फ़ीकी सी क्यों पड़ गई है और पत्रकारिता के नाम पर सिर्फ उन्माद ही क्यों परोसा जा रहा है?

**फिर 'श्रम देवी' में यह सवाल लॉक डाउन के दौरान शहर से लौटती हुई एक प्रवासी मजदूर महिला भी पूछ रही है और हमें जवाब देना होगा कि वह शहर जो उसको बड़ा उसका सा लगता था आज उसी के लिए उसमें जगह क्यों नहीं है? कि वह सरकार जो हर बार** वायदे करती थी उससे, आज उसको घर से निकाल कर जब सड़क पर फेक दिया गया तो चुप क्यों है?

**अगले संकलन 'लुढ़कती अर्थवयवस्था पर ' में यह सवाल उस 5 ट्रिलियन डॉलर की ओर अग्रसर अर्थव्यवस्था से है, अर्थशास्त्रियों से भी है, कामगारों से भी है, और सरकारों से भी है, क्या किया जाए कि गरीबों का इस बढ़ती भागती अर्थव्यवस्था में समन्यव हो सके। कविता में लुढ़कती अर्थवयवस्था के बीच सरकार के 'आल इस वेल' कहने के रवैये** को **लेकर व्यंगात्मक रूप से जवाब माँगा जा रहा है।**

**'स्वप्न रस ' में सवाल खुद से पूछे गए हैं कि अपने स्वप्नों को पाने के संघर्ष के दरमियान हम क्यों रुक जाते हैं, थक जाते हैं? क्यों हम बहाने बनाने लगते है कि छलांग लगाकर शिखर को, स्वप्न को पा लेने का अभी वक्त नहीं है? इस कविता में वीर रस के माध्यम से खुद से जबाब मांगकर सपनों के पीछे भागने के लिए खुद को झकझोंरा भी गया है।**

**'क्यों गुलिस्ता उजड़ गया ' शीर्षक, दिल्ली दंगों पर एक सवाल खड़ा** करता **है और जिसका जवाब सिर्फ दंगाइयों को नहीं, सरकारों को भी, समाज को भी और शायद हमें-तुम्हें भी अपने जेहन में झांक कर देना चाहिए, पर हां** इस बात का **जवाब तो देना ही होगा।**

**आगे 'सब तुझ पर है ' में शायद सच में सब कुछ उसी पर तो था जिसे हम आप खुद से ज्यादा भी पसंद करते थे। यहां पर सवाल किसी व्यक्ति विशेष से ना पूछ कर जवाब असहाय, निरीह परिस्थितियों से** माँगा **जा रहा है कि कैसे हम इतने दुर्बल, व्यर्थ और निरर्थक हो गए की हमारे बीच जो कुछ भी है, उसकी किस्मत तय करने की ज़िम्मेदारी, शक्ति और शायद समझ भी सिर्फ़ उसमें** ही **है।**

**'कि तुम हो कि नहीं हो कि होकर भी नहीं हो ' में शायद आप उनसे मिल चुके हैं जिनसे** मिलकर **हमें ऐसा लगता है कि वह हमेशा हमारे साथ हैं और हम नित नई नई कहानियां उनको लेकर अपने मन में बुनते रहते हैं। फिर एक समय ऐसा आता है कि लगता है , 'हां सब कुछ अधूरा ही तो था, कि सब कुछ कोरा ही तो था '। यहाँ जवाब उनसे ही नहीं उन परिस्थितियों से भी मांगे गए है जो हमें ऐसी विवशताओं में डाल देंती हैं कि हम दिल और दिमाग सब उनपे लुटा के 'उनके ना होने में भी उनका होना ढूंढ़ लेते है '।**

**‘क्यों ज़िन्दगी तनाव में है ’ शीर्षक में आप ज़वाब मांगते हैं अपने मस्तिष्क से कि क्या ऐसी कठिन परिस्थिति आ गई थी कि** प्रतिष्ठित कलाकार **सुशांत सिंह राजपूत को आत्महत्या करनी पड़ी? अगर हमारा मस्तिष्क ऐसे सवाल खड़े करता है कि** हमें **हमारा** जीवन व्यर्थ लगने लगता है, तो खुद के दिमाग को हमें कैसे समझाना चाहिए। कि हां शायद थोड़ी ही दूर पर मेरा टेलीफोन भी पड़ा है जिसे हम उठा ले, एक **और प्रयास कर लें और कॉल लगाकर किसी जाने पहचाने को** दिल में छिपी बातें करके मानसिक तनाव को थोड़ा हल्का करले**। आजकल के तनाव भरे दौर में मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान बहुत ही आवश्यक है।**

और जवाब सिर्फ हमने ही नहीं मांगे हैं, हमारे संविधान ने भी मांगे हैं, कि मैंने तो तुम सबको एक समान नजर से देखा है, जाना है, पहचाना है तो तुमने ऐसा क्या किया है, कि अपने बीच दीवारें खड़ी कर ली हैं और बांट दिया है एक दूसरे को कई नामों से, कई पहचानो से?

**अंत में 'एक सवाल मजदूरों का' में कुछ सवाल मजदूर ने भी उठाये है बड़ी मासूमियत के साथ, जिनका जवाब हमें देना होगा भले ही शायद सवाल कुछ हास्यप्रद हो। सवाल चाहे जितने बुरे हो, चाहे जितने उथले हो- जवाब देना होगा क्योंकि एक बुरे सा बुरा सवाल भी 'एक सवाल ना करने से' बहुत ही बेहतर है।**

**सवाल पूछने और जवाब मांगने का यह सिलसिला यहीं खत्म नहीं होगा। हम फिर से सवाल पूछेंगे अगले संकलन में, क्योंकि हमारे संविधान का अनुच्छेद 51A हमें यह बताता है कि हमारा मौलिक कर्तव्य है कि हम सवाल पूछकर और जवाब मांगकर अपने देश और समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद, ज्ञान अर्जन और सुधार की भावना का विकास करें।**

धन्यवाद हम फिर आएंगे नए सवालों के साथ और फिर कहेंगे "जवाब देना होगा" हाँ "जवाब देना होगा” **।**

## विषय - सूची

**जवाब देना होगा**
**सवाल एक पत्रकार की कलम से**
**श्रम देवी**
**लुढ़कती अर्थवयवस्था पर**
**स्वप्न-रस**
**क्यों गुलिस्ता उजड़ गया**
**सब तुझ पर है**
**तुम हो , कि नहीं हो , कि होकर भी नहीं हो**
**क्यों ज़िन्दगी तनाव में है ?**
**एक सवाल  मजदूरों का**
**अखंड है भारत , एक है भारत**

# जवाब देना होगा

इस खण्ड में एक स्त्री के माध्यम से जवाब माँगा गया है, जिसने अपने जीवन चक्र में कई तरीके के जुल्म देखे हैं, जैसे भ्रूण हत्या, बाल विवाह और दफ्तरों में उत्पीड़न। जिसे पितृसत्ता की व्यवस्था ने सिर्फ लड़के पैदा करने के लिए मजबूर कर दिया है और उसकी खूबसूरती पर लांछन लगाया गया है। वह सवालों के जवाब मांग रही है चीख़ कर, चिल्ला कर और यह चेतावनी भी दे रही है कि अगर जवाब नहीं दिया गया तो आने वाली नस्लें और समय, सब को माफ नहीं करेगा।

हाँ मैं एक औरत हूँ,
और तुमने मुझे,
एक माँ ,एक बहन,
एक पत्नी, एक बेटी,
के रूप में पहचाना है,
पर जब तुम्हारी नजरें,
सिर्फ मेरे तन को उकेरती हैं,
मन मेरा खिन्न बहुत होता है,
और मुझे लगता है यही समय है,
कि तुम्हे कटघरे में खड़ा करके,
तुमसे सवाल कई सारे किये जायें,
और तुम्हे जवाब देना होगा, हाँ तुम्हे जवाब देना होगा I

मेरी जो आबरू है,
जो मेरी होकर भी, मेरे हाथों में नहीं है,
क्योंकि तुम इसके रहनुमा बन बैठे हो,
इसके चौकीदार बन बैठे हो, इसके तलबगार बन बैठे हो,
और मेरे जिस्म को जब मैं चलती हूं,